



22142259



HINDI B – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI B – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI B – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Tuesday 13 May 2014 (morning)
Mardi 13 mai 2014 (matin)
Martes 13 de mayo de 2014 (mañana)

1 h 30 m

TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for paper 1.
- Answer the questions in the question and answer booklet provided.

LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la prueba 1.
- Conteste todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

पाठांश क:

स्कूल हैं कि सीखते नहीं

काम ज़रा मुश्किल है, लेकिन जाड़े की किसी ठंडी कोहरे भरी सुबह थोड़ी सी हिम्मत दिखाएं और सुबह छह बजे घर से बाहर आ जाएं। आपको वहां चार बरस या उससे ज़्यादा उम्र के बच्चे स्कूल की बस का इंतजार करते मिल जाएंगे। अब



5 आप चाहें तो इन बच्चों की हिम्मत को सराहें, या फिर इन स्कूलों के निर्दय ढंग की निन्दा करें। लेकिन इससे आगे आप कुछ नहीं कर सकते। आप क्या इनके आगे तो सरकार भी बंबस है। इन बच्चों पर हो रहे इस अत्याचार का पूरे समाज के पास कोई विकल्प नहीं है। इस विकल्प को खोजने के लिए किसी अतिरिक्त बजट या संसाधन की भी जरूरत नहीं है। जिस समाज में इतना छोटा सा समाधान मौजूद न हो उससे यह उम्मीद कैसे की जाए कि वहां सभी गरीबों के लिए अलाव और कंबल वगैरह की व्यवस्था हो सकेगी।

प्रतिक्रिया 1

15 इसके लिए तो मैं सबसे ज़्यादा दोषी मम्मियों को मानता हूँ... कि उनका लाड़ला एक दिन स्कूल नहीं गया तो ज़िंदगी की दौड़ में वह पिछड़ जाएगा और मेडल पड़ोसन के बेटे के हाथ लग जाएगा... काश मम्मियां एकजुटता दिखाती और ऐसे कोहरे में अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजतीं।

प्रतिक्रिया 2

अगर स्कूलों का समय निर्धारित करने में बच्चों की राय और निर्णय को मान्यता दी जाय तो इस लोकतान्त्रिक देश में कल के भविष्य को लोकतान्त्रिक होने का मतलब समझाया जा सकता है।

प्रतिक्रिया 3

किसी स्कूल ने नियम के अनुसार कभी किसी गरीब को दाखिला दिया है क्या?

प्रतिक्रिया 4

20 यह कहना गलत होगा कि स्कूल ही ज़िम्मेदार हैं, हमें याद होना चाहिए कि हमारी पारंपरिक शिक्षा पद्धति हमें सुबह जल्दी पढ़ने की सलाह देती है। अगर इन सभी में सुधार लाना है तो सबसे पहले हमें अपने आप में सुधार लाना होगा।

ब्लॉगर- हरजिन्दर, <http://www.blogs.livehindustan.com> (2010)

पाठांश ख:

डा. नामवर सिंह से साक्षात्कार

डॉ. नामवर सिंह एक लेखक हैं जो साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में प्रख्यात हैं। प्रस्तुत है आलोचक डॉ. नामवर सिंह से डॉ. अभिजात की बातचीत।



कई दशकों तक लगातार आलोचक के तौर पर अपने रचनाकर्म के बाद अब क्या कुछ करने की इच्छा बाकी रह गई है?

- 5 गालिब का शेर मैं कहना चाहूंगा - “हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले।” मेरी कई तमन्नाएं अधूरी हैं, और हर इच्छा काफ़ी बलवती है।

लिखने को लेकर भावी योजना क्या है?

उम्र के चलते स्वास्थ्य सम्बंधी सीमाएं हैं। अब व्यस्तताएं बढ़ गई हैं। अब जो कुछ बोल लेता हूँ, वही मेरा रचा हुआ है।

- 10 इन दिनों आपके छोटे कथाकार भाई काशीनाथ सिंह अपनी कहानी “काशी का अस्सी” को लेकर खासी चर्चा में हैं। उस पर फ़िल्म बन रही है और कहा जा रहा है कि इस फ़िल्म के आने के बाद फ़िल्मी दुनिया में कहानियों का ढर्रा बदल जायेगा। और चूंकि फ़िल्म साहित्य की तुलना में एक बड़ा माध्यम है लोग आपको काशीनाथ सिंह की वजह से जानने लगेंगे।

- 15 मेरे लिए इससे बढ़कर कोई खुशी नहीं हो सकती कि मैं काशीनाथ सिंह के भाई के तौर पर जाना जाऊँ। मैं यह मानता हूँ कि फ़िल्म साहित्य से विशाल और लोकप्रिय माध्यम है और आम आदमी पर अपनी अधिक पकड़ रखता है। मैं मानता हूँ कि मेरा सबसे बड़ा मीडिया मेरे छात्र हैं। अध्यापन के लिए मेरे जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय पहुंचने के पूर्व हिन्दी बोलने वाले अपने को दीन-हीन समझते थे पर बाद में तो हिन्दी की स्थिति इतनी सबल हो गई कि वहां छात्रसंघ ने अपनी भाषा के तौर पर हिन्दी को ही अपना लिया।

- 20 आज जो नई पीढ़ी साहित्य सृजन में लगी है उसके संदर्भ में क्या कहना चाहेंगे?

अद्भुत और सराहनीय। उपन्यास में तो कम लेखन हो रहा है किन्तु कविता, कहानी, आलोचना इन विधाओं में नई प्रतिभाएं उभर रही हैं। नई पीढ़ी उल्लेखनीय योगदान दे रही है और मैं इस रचनाशीलता के प्रति आश्वस्त हूँ।

- 25 साहित्य में एक साहित्यिक धारा के तौर पर जिस “जनवाद” की चर्चा पिछले दशक में जोर-शोर से थी, क्या यह मान लिया जाए कि वह विचारधारा संकट में है?

मैं यह मानता हूँ कि आम आदमी या दबे कुचले लोगों की समस्याओं के हल का सपना कभी नहीं मरता और जब तक मनुष्य में सही और ग़लत का निर्णय लेने की क्षमता बची रहेगी विचारधारा का अन्त नहीं होगा। साहित्य में भले कुछ लोग सही दिशा नहीं तय कर पा रहे हों लेकिन मनुष्य के अन्दर विवेक है। विचार भले धारा के रूप में न रहे किन्तु विचार तो बने ही रहते हैं।

कथोपकथन; <http://www.srijangatha.com> (2012)

पाठांश ग:

पंचवटी- इतिहास से विज्ञान तक

सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने अपने शोध में रामायण की उस पंचवटी को शामिल किया, जहाँ भगवान श्रीराम ने वनवास के चौदह वर्षों में निरोग एवं स्वस्थ जीवन व्यतीत किया था। उन्होंने पंचवटी में शामिल पाँच



- 5 वृक्षों- पीपल, बरगद, आँवला, बेल तथा अशोक पर अलग-अलग शोध किये। इस शोध में पाया गया कि बरगद का वृक्ष न केवल गर्मी को रोकता है अपितु प्राकृतिक वातानुकूलन का कार्य भी करता है। आँवले में पाया जाने वाला विटामिन "सी" जहाँ प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का सबसे सस्ता उपाय है वहीं बेल का सेवन पेट की बीमारियों से बचाए रखता है। अशोक के वृक्ष का उपयोग महिलाओं को कई बीमारियों से बचाने में किया जाता है। पंचवटी के वृक्षों में से हर एक को लगाने की अलग विधि है। कौन सा पेड़ किस दिशा में होगा तथा कितनी दूरी पर होगा, इसका भी वैज्ञानिक आधार है। पीपल का पेड़ पूरब दिशा में लगाने पर 1800 किलो. प्रति घंटा की दर से आक्सीजन का उत्सर्जन करता है।

- 15 वैज्ञानिकों का शोध दल इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि पंचवटी में लगने वाले पौधों के अपने अलग-अलग लाभ हैं, इन वृक्षों अथवा इनके फलों से न केवल सामान्य से अलग वातावरण तैयार होता है, अपितु उससे मानव शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। पेड़ों के बीच 10 मीटर की दूरी उचित होती है। पंचवटी में अलग-अलग दिशाओं में लगे इन पौधों से गुजरकर आने वाली मिश्रित हवा आरोग्यवर्द्धक होती है। इन पाँचों वृक्षों के पत्ते झड़ने और फल आने का समय भी वर्ष में अलग-अलग है इसलिए ये वृक्ष वर्षभर छाया और फल देते रहते हैं।

- 20 शोध द्वारा प्राप्त परिणाम बेहद चौंकाने वाले थे जिन्हें राज्य सरकारों ने भी मान्यता दी। वैज्ञानिकों के शोध को उत्तर प्रदेश और राजस्थान सरकार ने विकसित करने का कार्य प्रारंभ कर दिया है। इनके शोध को पंचवटी परियोजना का नाम दिया गया। पर्यावरण मंत्री ने इसे सरकारी स्कूलों में लागू किया। राजस्थान में जालोर ज़िले को चुना गया जिसके सौ गाँवों में पाँच सौ पंचवाटियाँ लगाने की योजना बनी। हरित राजस्थान नामक इस योजना के अंतर्गत प्रत्येक गाँव के पाँच कोनों को
- 25 चुना जाएगा, जहाँ पाँच पाँच पेड़ लगाए जाएंगे। जलवायु परिवर्तन के पर्यावरण पर बढ़ते दुष्प्रभाव से सभी परिचित हैं। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकृत यह पंचवटी इसके लिए हितकर है और है भी इतना सस्ता और सुगम कि हर कोई इसे अपना सकता है।

डॉ. प्रदीप श्रीवास्तव, <http://www.abhivyakti-hindi.org> (2010)

पाठांश घ:

ब्लॉगिंग का बढ़ता आकर्षण



5 ब्लॉग के जरिए धनराशि कमाने के प्रलोभन ने बड़ी संख्या में युवकों को हिंदी ब्लॉगिंग की ओर आकर्षित ज़रूर किया। किसी भी अन्य माध्यम की ही भांति यहां भी बाज़ार के नियम लागू होते हैं। अच्छी गुणवत्ता तो ज़्यादा ग्राहक। जितने भी (आर्थिक दृष्टि से) सफल ब्लॉगर हैं उनकी तकनीक पर अच्छी पकड़ है। खुद मीडिया भी अपने शोधकार्य के लिए उनका सहारा लेता है जिससे उन्हें प्रचार भी मिलता है, पाठक भी और प्रामाणिकता भी। ब्लॉग को वैकल्पिक मीडिया के रूप में लेना हो तो मीडिया वाली विशेषताएं भी चाहिए। सफल ब्लॉगर अपने लेखों के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के तरीके से परिचित हैं। वे सामान्य मीडिया से अलग हटकर सामग्री दे रहे हैं। वे सरल भाषा का प्रयोग करते हैं और सरल मुद्दे उठाते हैं। अनावश्यक गांभीर्य और साहित्यिकता से दूर रहते हैं।

15 कभी गोपनीय या अनन्य सूचनाओं के जरिए, कभी विषय पर गहन शोध के जरिए ब्लॉगर अपनी अलग छवि बना रहे हैं। वे विभिन्न स्रोतों पर उपलब्ध विषयवस्तु को रुचिकर और समग्र अंदाज में पेश कर रहे हैं। यह समग्रता, नवीनता और विशिष्टता उन्हें अद्वितीय बनाती है, उनकी मांग बढ़ाती है। अनेक वेबसाइटों व ब्लॉगों पर उन्हें उद्धृत किया जाता है। इस प्रकार उनके उचित संबंध तो बनते ही हैं, पाठक गणना भी चक्रवृद्धि आधार पर बढ़ती है।

20 सफल व्यक्तियों के ब्लॉगों से यही सीखने को मिलता है कि व्यावसायिक रूप से सफल होना है तो उत्तम सामग्री, तकनीक, सुगम-सरल डिज़ाइन, निरंतर अपडेट, विश्वव्यापी ब्लॉगों का अध्ययन और इन सबसे ऊपर कुछ अनूठा, अलग, अद्वितीय विषयवस्तु होना ज़रूरी है। यानी एक अच्छे निर्माता, अच्छे प्रबंधक और अच्छे विक्रेता तीनों की भूमिका निभाने की ज़रूरत है।

बालेन्दु शर्मा दाधीच, <http://www.srijangatha.com> (2012)